ANUP SHREE VIJAYINI
SUPERVISOR: DR. K.K.KAUSHIK
Department of Hindi, Faculties of Humanities and Languages
Jamia Millia Islamia, New Delhi-25

UDARIKARAN KE BAD HINDI UPANYASON MEIN CHITRIT MADHYAVARGIYE JIVAN (1991 SE 2010 TAK)

ABSTRACT

पिछले 20 सालों में समाज में जिस तरह के परिवर्तन हुए हैं, ख़ास कर मध्यवर्ग का जिस तरह से स्वरूप परिवर्तन हुआ है। उदारीकरण ने मध्यवर्ग में जिस तरह से क्रांति को संभव किया, उन सभी पक्षों को मैं गंभीरता से समझना चाहती थी। इस दौर के उपन्यासों को पढ़ते हुए मुझे लगा कि इस परिवर्तन को उपन्यासों के माध्यम से समझा जा सकता है। उदारीकरण की नीति ने मध्यवर्ग के सामने एक झटके में कई विकल्प प्रस्तुत कर दिया। अब मध्यवर्ग और उच्च मध्यवर्ग की जीवनशैली में बहुत हद तक समानता दिखने लगी। नैतिकता के कई सवाल, जो मध्यवर्ग को संयमित और नियंत्रित करने वाले थे, वे धीरे–धीरे बेमानी साबित होने लगे। उदारीकरण के गर्भ से एक ऐसी पीढ़ी निकली जो अपने मध्यवर्गीय संस्कारों से किसी भी हालत में बाहर निकलकर बिंदास जिंदगी बिताने में यकीन करने लगी। मैं इन सभी परिवर्तनों का सटीक मूल्यांकन करना चाहती थी।

स्वयं मध्यवर्ग से संबंध रखने की वजह से मैं यह देखना चाहती थी कि जो परिवर्तन हो रहे हैं, नैतिकता के जो नए मानदंड बनाए जा रहे हैं, वे हमें कहाँ ले जा रहे हैं? स्त्रियाँ क्या सच में समाज की मुख्यधारा में शामिल हो पा रही हैं? उदारीकरण ने स्त्रियों के जीवन में किस तरह के परिवर्तन को संभव किया? इस सवालों से लगातार जूझते हुए ही मैंने यह तय किया कि मैं अपनी पीएच.डी. का विषय उदारीकरण के बाद हिन्दी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन पर काम करूँगी।

अध्ययन की सुविधा के लिए शोध विषय को पाँच अध्याय में विभाजित किया गया है। *प्रथम अध्याय* में 'मध्यवर्ग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' की विवेचना की गयी है। मध्यवर्ग अपने चरित्र और स्वरूप में अनवरत परिवर्तनशील रहा है। इस अध्याय में मध्यवर्ग की अवधारणा को स्पष्ट करने के बाद यूरोप में मध्यवर्ग के उदय पर प्रका"ा डाला गया है। यूरोप में भी मध्यकाल देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप अपना स्वरूप बदलता रहा है।

इसी अध्याय में आगे भारत में मध्यवर्ग के उदय की प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है। यूरोप की तुलना में एक शताब्दी बाद हुआ और यहाँ के मध्यवर्ग के उदय की परिस्थितियाँ यूरोप से कई संदर्भों में अलहदा रही हैं।

द्वितीय अध्याय में 'उदारीकरण, मध्यवर्ग और हिन्दी उपन्यास' के अंतःसंबंध को दिखाया गया है। जिस तरह उदारीकरण और बदले नये मध्यवर्ग का परस्पर एक–दूसरे से संबंध है, उसी तरह मध्यवर्ग और उपन्यास का भी। दरअसल उदारीकरण ने मध्यवर्ग को प्रभावित किया, इसलिए उदारीकरण पर विचार करते हुए, उदारीकरण के बाद मध्यवर्ग के स्वरूप में आए परिवर्तन को स्पष्ट किया गया है।

इस अध्याय में उदारीकरण के बाद भारत में मध्यवर्ग के विकासक्रम को द"र्ाया गया है। उदारीकरण के बाद हिन्दी उपन्यासों के परिदृश्य में व्यापक परिवर्तन आया है। इन परिवर्तनों को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। इसके लिए उदारीकरण के बाद मध्यवर्गीय जीवन पर केन्द्रित हिन्दी उपन्यास को आधार बनाया गया है।

तृतीय अध्याय 'मध्यवर्ग का नया अवतार और हिन्दी उपन्यास' विषय पर केन्द्रित है। उदारीकरण के प्रभाव से मध्यवर्ग के स्वरूप में जो बदलाव आया उसकी जीवंत उपस्थिति नब्बे के बाद के उपन्यासों में दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत अध्याय में उदारीकरण के बाद उपन्यासों में मध्यवर्ग के बदलते स्वरूप के साथ उसकी संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान, जीवन–मूल्य, उसकी सोच और उसके व्यवहार में आए परिवर्तन को दिखाने का प्रयास किया गया है।

चतुर्थ अध्याय 'उदारीकरण के बाद हिन्दी उपन्यासों में स्त्री–पुरुष' विषय पर आधारित है। आलोच्य उपन्यासों के केंद्र में स्त्री–पुरुष की स्थिति को अलग–अलग संदर्भों में रखकर उनकी भूमिका को स्पष्ट किया गया है। पितृसत्ता के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए स्त्री–पुरुष की भूमिका को दिखाया गया है कि किस तरह इस सत्ता को मजबूती प्रदान करते हैं। साथ ही उपन्यासों के माध्यम से इस अध्याय में यह भी दिखाने का प्रयास किया गया है कि पितृसत्ता न तो स्त्रियों के हित में है और ही पुरुषों के हित में। पितृसत्ता से दोनों वर्ग आहत और आतंकित दिखाई पड़ते हैं।

पाँचवे अध्याय में 'उदारीकरण, मध्यवर्ग और प्रेम की अवधारणा' विषय का वि"लेषण किया गया है। प्रेम जीवन का शाश्वत सत्य है। मानव समाज में स्त्री और पुरुष के बीच प्रेम संबंध जाने कब से रहा है। प्रेम मनुष्य के जीवन की स्वाभाविक वृत्ति है। यह व्यक्ति को अस्तित्व बोध कराने वाली भावना है। प्रस्तुत अध्याय में प्रेम की अवधारणा पर प्रकाश डाला गया है।

उदारीकरण के बाद पूँजीवाद के प्रभाव से प्रेम के परम्परागत मूल्य को भी धक्का लगा। इसकी दीवारें सबसे ज्यादा दरकी हैं। बाजारवाद ने प्रेम को कई रूपों में प्रभावित किया है। ऐसी स्थिति में प्रेम के स्वरूप, स्थिति और अभिव्यक्ति के माध्यमों में बदलाव का आना लाजिमी है। इस अध्याय में प्रेम के इस बदलते स्वरूप को व्यक्त किया गया है। उपन्यासों के संदर्भ में प्रेम के स्वरूप का अध्ययन किया गया है।